

II-85 धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

वि
३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ मया श्रुतमकस्मिं स मय
रुगवान् वेदा मय यो सुवर्णं शृगना समि य वेत निरु न विद न ति सा ॥ अ न क द व
ना ग य कृ ग श्व वा सू न ग न उ कि न्न न म हा न ग वि द्या ध न स न च यः सा ना ध म ला क म्मे र्व ना म
ध म्मे य यो यं द स य मानः ॥ अथ ना ना य ल्म अ सु ने र्जितः ये ना कि न्नः स तु सः न आ व ल की नः
य न रु ग वां स ना य स का ना य स क म्प ह ग व तः यो दो नि न सा रि वं द्या ॥ अ का क नि व र्णः ॥ स नः
व मा रु ॥ स य रु शी रु ग वा न् सर्व द शी सर्व स त्वा न् कं य कः न द्द ग य तु रु ग वा न् ध र्म य र्था यं य न द व

व ना ग य कृ ग श्व वा सू न ग न उ कि न्न न म हा न ग ना कृ सा द या म न ष्या म न ष्याः म रु ति ग म्पु सं या त् सं
ग्रा म वा रु य रु व ल न वि वा द न यो न म ष्म ग न न ॥ सर्वं उ वि ऊ यि ना रु वि ष्या कि ॥ रु ग वा ना रु ॥ कि म न्कु
ना ना य ल्म ली ता मि मा या ध न न्ना ना य ल्म मा या वी ल म हा व ला सि अ न क मा या आ ल क्सी न स त्वा चि द् ०
य सि ॥ किं सं ग्रा म वि ऊ य य नि यु क्त स ॥ ना ना य ल्म आ रु ॥ ०० हा रु रु ग वा न का मा सू न द मी य ना कि नाः
हं ॥ न दा च द वा क वि ल ला यि तां क यि द्वि धं मि ना न द्द ग य तु रु ग वा न् ध र्म य र्था यं म्मा च स त्वा नां सं ग्रा
म वि ऊ यि ना रु वि ष्या कि ॥ अ सु ना न य ना ऊ यि ष्या कि ॥ रु च्य मान रु द या ग्ति न ध नि म ग ल्म ष्म ना हि

वि
३

न कथं च तत्र लीनमना जावतु वागन कालन नन समयन विह्वलं नाना मत धागमा र्दसम्यक् व
द्वा विद्या नन ह सम्यक् वासुग मालो कविद नरुनः यत्र यद म्मा सा नयि सा सा दवाना ये मनूष्या ना ये
वद्वा रुग वाना न ह्य रुग वता विह्वलं न स्य गथा गम स्य सका ज्ञा ल्मया ल्मया ॥ १ ॥ मानि स हा मा
यो विजय वादि लाना म विद्या मुकु य दानि उ कृदि नानि धा नि नानि वा वि नानि यय वा फानि गुन मा
दि नानि यन र्थ म् विस्म न ह संयु कानि ज्ञाः धन नि त्थाः यु रा वन नाना ये हा क दा वि द्वा रु
रुयं यो न रुयं यो त्व नान वन व नि स रु सो नि धर्म ह ना र्थ का न यि त्वा य ज्ञा त्म वि न ग वा न

२

ग न रा वं गृहा कृ द रा वा उ द्या न या ज्ञा मि व धा नि त्थाः यु रा वन जा निं य नि वं र्थ म्मा सा वा
ना म वा धि द्वा कु व ही ना जा वरु वा स य न ल सम वा गतः ॥ १ ॥ ज्ञा ह्यां सक ल न ला कृ मा ह्या यि त
वान् य र्व द्या न या न मि ता नि य्वा न द न म र्व स त्वा नां या थ ति ला वि ह्मं मू य ना थ न वे स धा नां
य मि न ना ना ग व न व स धा ना व र्व ह स र्व स तः स र्वो य क न ह स म्मा द्या व र्व वा न य थ ॥ ना ना य न
मू स्या धा त्री न्याः यु रा वन नान क क ल्य ज न स रु सो नि दान या न मि ता स मा नं य मि त वा ना द व
ना ग य कृ ग च र्वा स न ग नू उ कि न न स हा न ग म नू ष्या म नू ष्या ॥ १ ॥ क ना ति न च न य कि य कृ

वि
ऊ

मूढादुर्निचतुःषष्टि कल्या सरसा विषय दूरी कृत्वा यथा देव नय रया लागा न मूढ न सुमं न मू
ययिला। च कऊ मन्त्र नू लना समु कं वा धि म रि सं वृद्धा इह। ला क व ज नू लना द व गु नः स मू न
॥ न यथा ॥ ना नाय न उ कू राने त्वे मा हा मा या विजय वा हि ती म न य दा नि ॥ ॥ न यथा ॥ न म स्त
आ नू ग न यु ति वि न यः सर्व वृद्ध वा धि स त्वे ला। न मः सर्व मू डा म नु य द यः ॥ उ मा य म हा मा य मा
मा या ध नि म हा मा या च कृ ण मा या नू य न। उ म १ म म स वे दू स स त्वाना। अ म य १ मा रु य १ म कू य
य १ मा न य १ म न १ वि धं स य १ स न १ मा हा मा या। अ ल ल ल ल ल म हा मा या आ ला स ह स म वि। त

३

दु मु नि ना स द म उ ऊ कू लित न उ सर्व म न था ग न ह द य ग र्हा अ नि ध नु य न मू या ज ता म न
कृ ण य हा कि म य ल मू क न य कृ ह स। न कू रि रु ग व ति सर्व न था ग न कू म र्हा ना द व अ वि स
त्य न म हा मा या विजय वा हि ती म न य दा नि। स न १ स दू न था ग न कू न ना ना नू य ना ग दू ग दू। स वा व न कृ
य क नि। य न स न वि दा य नि। मा रु य सर्व दू याना न कू १ म म स वे सर्व स त्वानां ये नि न ति सि ह्वा
स व रु या य ड व यः स्वा हा। म हा मा या धा नी ती य ला हा॥ म हा मा या या गि नी य ला हा॥ म हा म
लू ला धि ला ना धि रि न ला हा॥ व ऊ ध न व दि न यू जि न ला हा॥ य दू या नि धि य ला हा॥ सर्व द

वि
५

यननाजाखवनिधुर्वं॥गगनानायातयनसेयाःविधुंसिगाःयुयलायिगाःकचिमुर्छितामुभोय
तिगातयांयतिगानांनानायनदशकुशलनकमय०दलुनसासिगवः॥ननुनयांजीविगाननीः
कार्यशत्रुवनानायनेधात्रलीयरावाडस्रशंशायाधुवल्नानायन००मानिधात्रलीमनुयदा
निष्ठुयिवांअमुविवाउकनवाअउकनवायुनिदिनगिवानालिउव्रीनया।सयकेननरुयम
यियायस्केचैकययिवायन्यस्केचैयुनिलरनं।जातिस्मात्रविवाति।सर्वसखायरागीयअदि
नरुवनकुशलसुधमैधुरिननिध्वानाकुलसूयायवाकिम्वद्वाद्याननायननयनंननाय

५

तन्मांधात्रलीधात्रयमानकूनयूगायाकुलदहितायारिहूवाहिकुलीवाजाजावाजाउयगाः
वायुक्कलावा।मनकालगत०यसिस्मनयेमरातकोदकाहमीरुनः०ससिस्मनयधुस्तीवाः
यूनवावास्मानयहात्सप्रवंनियनंजातिस्मात्रवति।याधिसुखसंबंधिनीया।अथनाजायनउवाच
अहाआधुयमितिक्कलाहावयकगदावनमालासकूटसवनीयंरुगवंनप्रियदक्रिदीकृयय
नमायहसिगवदनाहवाहगवंकगाथायासुवंतिस्मा॥अहदसूनदवानांशुवाहाहादुनूकनं॥
निवाहाकाअगाअसलाकागीकनमासुगा॥अरावसर्वधमीसांरुनधमयकासकहाधमीध

मे विनिर्मला सत्यधर्मनमामुत ॥ ॥ अथ नाना यम रोग वक्तव्यं दाम्य साधू रोग वा त्रिति कृत्वा य
 कान्ता इह ग ॥ ॥ ॐ दम वाच दृग्गवाना रुमना सुच द वना ग य रु ग च द्वा सु न ग नू उ कि ने न स
 वि ॥ ॥ हान ग वि शोधना दया मनू या मनू या सा च स वी व नी य व द ॥ ॥ रोग व ना रोग वि त म य न च वि नि
 ॐ ॥ ॥ ॐ य महा माया विजय वा हि मो ना ना य द य द्वा धन ही भक्त य दानि स मा फा न्य नि ॥ ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-85